पुण्यभूमि भारत संस्कृति वाचनमाला ◆ संपुट-७ ◆ क्रमांक-३ ◆ वर्ग-३

पंचांग

भाग-२

मू.ले. : जरशा
अनुवाद : वासुदेव प्रजापति

पंचांग

भाग-२

मू. ले. : जरशा

अनुवाद : वासुदेव प्रजापति

पुनरुत्थान ट्रस्ट

पुण्यभूमि भारत संस्कृति वाचनमाला

संपुट - ७
क्रमांक - ३ ◆ वर्ग - ३

प्रकाशक
पुनरुत्थान प्रकाशन सेवा ट्रस्ट
'ज्ञानम' ९बी, आनंदपार्क,
बलियाकाका मार्ग,
जूना ढोर बजार, कांकरिया,
अहमदाबाद - ३८० ०२८
दूरभाष : (०७९) २५३२२६५५

मू. ले. : जरशा

अनुवाद : वासुदेव प्रजापति

मुखपृष्ठ एवं चित्रांकन
अजित वाघेला

मुद्रक : साधना मुद्रणालय ट्रस्ट
५५/१४, सिटी मिल कम्पाउण्ड,
रायपुर दरवाजा के बाहर,
कांकरिया मार्ग,
अहमदाबाद - ३८० ०२२

प्रकाशन तिथि
आषाढ शु. १५
युगाब्द ५११२
२५ जुलाई २०१०

प्रति : २०००

मूल्य : २०/-

प्रस्तावना....

भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वाधिक प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ है । परन्तु संस्कृति तभी सुरक्षित रहती है जब उसकी परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है । हर नयी पीढ़ी को अपनी संस्कृति का परिचय प्राप्त होना आवश्यक होता है । हर नयी पीढ़ी का मानस संस्कृति के सत्त्वसे सिंचित होना आवश्यक होता है । संस्कृति का हस्तान्तरण शिशु अवस्था से ही घर में और विद्यालय में होना चाहिये । संस्कृति के केवल गुणगान करना पर्याप्त नहीं होता । कृति में, व्यवस्था में, विचारों में और वातावरण में उसका होना आवश्यक होता है ।

इन बातों का विचार कर पुनरुत्थान ट्रस्ट ने इस पुण्यभूमि भारत संस्कृति वाचनमाला के प्रकाशन का विचार किया है ।

आजकल लोग कहते हैं कि संचार माध्यमों के प्रभाव के कारण से छोटे बडे सभी की पढ़ने की वृत्ति और प्रवृत्ति बहुत कम रह गई है । परन्तु अनुभव और अनुमान कहता है कि अन्ततोगत्वा पुस्तकों का स्थान अन्य माध्यम नहीं ले सकते । सौन्दर्यबोध, कल्पनाशक्ति और रसग्रहण के विषय में पुस्तकें सर्वाधिक लाभकारी होती हैं ।

अतः आज परिस्थिति विपरीत प्रतीत होने पर भी मातापिता और शिक्षकगण छोटे छात्रों को इन पुस्तिकाओं को पढ़ने हेतु प्रेरित करें एवं उन्हें सहायता करें यही अपेक्षा है ।

पुस्तिकाओं के विषय देखकर प्रतीत होगा कि न केवल छोटे अपितु बडे छात्रों के लिये, और न केवल छात्रों अपितु उनके मातापिता और आचार्यों के लिये भी ये उपयोगी सिद्ध होंगी ।

वाचनमाला के विषय में आपके सुझाव अवश्य भेजें यही विनम्र निवेदन है ।

इति शुभम् ।

प्रकाशक

१३ चौघड़िया और होरा

(१) सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय में आने वाले चौघड़िये या होरा उस दिन के चौघड़िये या होरा कहलाते हैं ।

(२) सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय में आने वाले चौघडिये या होरा उस रात के चौघडिये या होरा कहलाते हैं ।

(३) चौघडिये सात हैं । चर, लाभ, अमृत और शुभ ये चार शुभ चौघड़िये हैं तथा काल, रोग और उद्वेग ये तीनों अशुभ चौघड़िये हैं। दिन में अथवा रात्रि में जो चौघड़िया शुरु में होता है, वही अन्त में भी होता है । तभी दिन या रात्रि के चौघड़ियों की संख्या आठ होती है ।

(४) होरा भी सात हैं । रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि । इनमें से चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र शुभ होरा है, तथा रवि, मंगल और शनि अशुभ होरा है । सूर्य की होरा राज्य की सेवा करने में, बुध की होरा ज्ञान प्राप्त करने में, शुक्र की होरा प्रवास करने में, शनि की होरा द्रव्य का, धन का संग्रह करने में, गुरु की होरा विवाह करने में, मंगल की होरा युद्ध अथवा वादविवाद करने में और चन्द्र की होरा सभी कार्यों के लिए शुभ मानी जाती है । दिन या रात्रि के समय में सात होरा पूरी होने के बाद प्रारम्भ की पाँच होरा पुनः आती हैं । इस प्रकार दिन या रात में १२ होरा होती हैं । प्रत्येक दिन की प्रथम होरा उस वार के नाम की होती है । जैसे कि रविवार के दिन प्रथम होरा रवि, सोमवार को प्रथम होरा चन्द्र, मंगलवार को प्रथम होरा मंगल आदि ।

(५) सामान्य रूप से यात्रा के समय चौघड़िया देखा जाता है। परन्तु आजकल लोग सब कार्यों में चौघड़िया देखने लगे हैं ।

दिन के चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि के चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन के होरा							
वार → क्रम ↓	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
२	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
३	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
४	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
५	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
६	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
७	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
८	रवि	चंन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
९	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
१०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल
११	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
१२	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र

रात्रि के होरा							
वार → क्रम ↓	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
२	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
३	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
४	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
५	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल

६	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
७	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
८	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
९	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
१०	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
११	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
१२	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल

चौघड़िया और होरा की सारिणी में आपको एक विशेषता दिखाई दी होगी कि कोई भी चौघड़िया या होरा सीधा, खड़ा या तिरछा पास पास में नहीं हैं ।

चौघड़िया और होरा का समय ज्ञात करने की पद्धति -

(१) दिन के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक का तथा रात्रि में सूर्यास्त से सूर्योदय का कुल समय कितना है, यह जानना । उदाहरण के लिये १० जुलाई को सूर्योदय ६-१० बजे तथा सूर्यास्त ७-१५ बजे होगा तो सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय १३ घंटे ८ मिनट हुआ ।

(२) इस समय को मिनटों में बदलने पर १३ ह्न ६० = ७८० और ८ मिनट जोड़ने पर कुल ७८८ मिनट हुए ।

(३) इस समय को ८ का भाग देने पर एक चौघड़िये का समय ज्ञात होगा। और इसमें १२ का भाग देने पर एक होरा का समय ज्ञात होगा ।

७८८ ह्न ८ = ९८ मिनट ३० सैकण्ड एक चौघडिया का समय होगा ।

७८८ ह्र १२ = ६५ मिनट ४० सैकण्ड लगभग एक होरा का समय होगा ।

(४) इसलिए सूर्योदय से प्रथम चौघड़िया ९८ मिनट ३० सैकण्ड का होगा । और सूर्योदय ६.१० बजे से शुरु होकर ७ घंटा ४५ मिनट ३० सैकण्ड पूरा होने पर दूसरा चौघड़िया शुरु होगा । इस प्रकार ९८ मिनट ३० सैकण्ड (१ घण्टा ३८ मिनट और ३० सैकण्ड) आगे जोड़ते जाने पर आठों चौघड़ियों का समय मिल जायेगा ।

(५) प्रथम होरा सूर्योदय से ६५ मिनट ४० सैकण्ड (१ घण्टा ५ मिनट ४० सैकण्ड) की होगी । जब सूर्योदय ६.१० बजे है तो प्रथम होरा ७.१५:४० बजे तक पूरा होगी औरी दूसरी होरा शुरु होगी । इस प्रकार १ घण्टा ५ मिनट ४० सैकण्ड जोड़ते जोड़ते अगले होरा का समय मिलता जायेगा ।

सूर्योदय - सूर्योस्त का समय हमेशा बदलता रहता है । इसलिए जिस दिन या रात्रि में चौघड़िया या होरा देखने की आवश्यकता हो उस दिन या रात्रि का सूर्योदय से सूर्योस्त तक का कुल समय निकालकर उपर्युक्त प्रकार से गणना करने पर ही यह समय जान सकते हैं । किसी एक दिन के लिए की हुई गणना दूसरे दिन के लिए लागू नहीं हो सकती ।

१४ छपे हुए पंचांग आपने देखे हैं

तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन पाँच मुख्य अंगों तथा गौण अंगों के अतिरिक्त भी पंचांग में बहुत अधिक जानकारी होती है । उसे भी जानें –

- विक्रम संवत्
- अंग्रेजी तारीख, मास, वर्ष अर्थात् ईस्वी सन
- हिजरी सन, पारसी सन, शक संवत्, वीर संवत् आदि
- विशिष्ट उत्सवों और पर्वों की जानकारी
- शुभ या अशुभ ग्रहयोगों की जानकारी
- पंचक, रोहिणी, ग्रहण खडाष्टक, कुंभ आदि
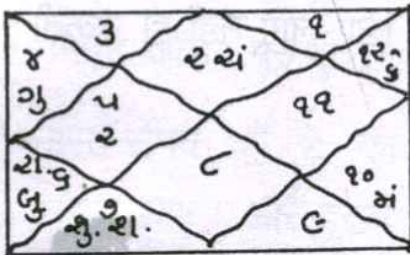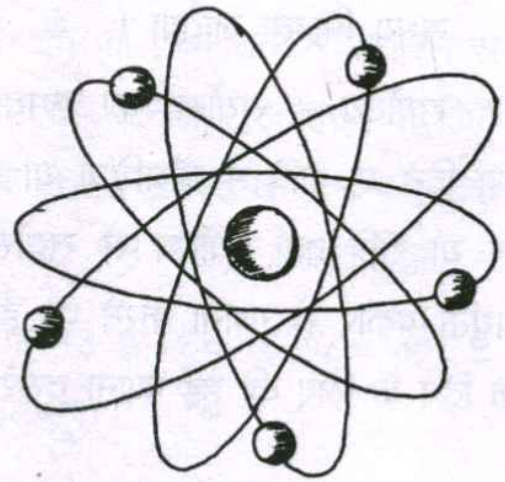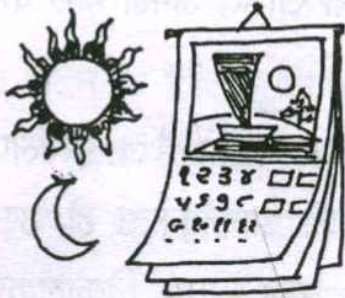
- वार्षिक और मासिक राशिफल
- चन्द्र की राशि, नक्षत्र, ग्रहों की गति, स्थिति और काल, सूर्य के उदय एवं अस्त काल
- लग्न, यज्ञोपवीत, गृहप्रवेश, वास्तु, व्यवसाय, खेती आदि के मुहूर्त
- अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं के संकेत
- समृद्धि, व्यापार-वाणिज्य, कृषि उत्पादन आदि की शुभ-अशुभ स्थिति के संकेत
- चौघड़िया, होरा, राशिकाल, अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी महादशाएँ

ऐसी ढेर सारी जानकारियों का संग्रह पंचांग में होता है । ये पंचांग देशभर में विविध नगरों में प्रकाशित होते हैं ।

१५ पंचांग की रचना का रहस्य

आकाशीय पदार्थों की स्थिति और गति का गणित अटपटा और समझने में कठिन है । हजारों वर्षों के निरीक्षण व परीक्षण के बाद भी समझने में कठिन है । भारत वर्ष के दिव्यज्ञानी महापुरुषों ने अपने दिव्यज्ञान के आलोक में यह सबकुछ प्रत्यक्ष देखा और सरल स्वरूप में पराबुद्धि धारण करने वाले विद्वानों के समक्ष उसका निरूपण किया । उसके आधार पर इन विद्वानों ने इसके शास्त्र रचे । यह ज्ञान दिव्यज्ञानियों से मिला हुआ होने के कारण यह शास्त्र 'अपौरुषेय' अर्थात् 'किसी मनुष्य के द्वारा नहीं रचे हुए' माने जाते हैं । खगोल शास्त्र के ऐसे पाँच ग्रन्थों के नाम हैं –

(१) पितामह सिद्धान्त (२) सूर्य सिद्धान्त (३) वसिष्ठ सिद्धान्त (४) पौलिश सिद्धान्त (५) रोम सिद्धान्त ।

इन ग्रन्थों में दिये हुए ग्रहगणित और गणना की पद्धतियों के आधार पर पंचांग की रचना की जाती है ।

पंचांग सामान्य रूप से एक वर्ष के लिए तैयार किया जाता है । दस वर्ष तथा सौ वर्ष के पंचांग भी तैयार किये हुए मिलते हैं । ७५, १०० अथवा १२५ वर्ष के पंचांग भी प्रकाशित हुए हैं ।

पंचांग तैयार करने वाले भारतीय ज्योतिषशास्त्री शास्त्रों के आधार पर ग्रह–नक्षत्रों की गति की गणना करने में इतने तज्ञ होते हैं कि इसमें तनिक भी त्रुटि नहीं हो सकती । हजारों वर्षों पहले से दिव्य ज्ञानी पुरुषों से प्राप्त ज्ञान और पद्धतियों के आधार पर पंचांगों की रचना की जाने के कारण सौ सवासौ वर्ष के पंचांगो में भी ग्रहों, नक्षत्रों और विभिन्न खगोलीय स्थितियों की जानकारी बिल्कुल सही और सटीक होती है तथा जरा सी भी त्रुटि नहीं होती है । भले ही इनकी गणनाएँ विशाल संख्याओं की और अन्यन्त सूक्ष्म हों । सूर्यग्रहण – चन्द्रग्रहण के स्थान और समय की जानकारी के लिए आज भी सम्पूर्ण विश्व में भारतीय ग्रहगणित की पद्धतियाँ ही उपयोग में लाई जाती हैं ।

१६ हमें पंचांग की क्या आवश्यकता है

इस पुस्तक को यहाँ तक पढ़ने से जीवन में पंचांग का क्या उपयोग है यह आपको बहुत अच्छी तरह समझ में आ गया होगा । परन्तु आप इसके उपयोग की एक सूची बनाइये । कदाचित कुछ बातें छूट गई होंगी तो वे इसमें आ जायेंगी ।

पंचांग के कारण से –

(१) तारीख, वार, मास, वर्ष, तिथि, होरा, चौघडिया आदि जान सकते हैं ।

(२) शुभ एवं विशेष कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त, ग्रहयोग आदि जान सकते हैं ।

(३) सूर्य या चन्द्र के ग्रहणकाल में प्रकृति में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों से वातारवण के ऊपर और पदार्थों के ऊपर होने वाले विपरीत प्रभावों से सुरक्षा कर सकते हैं ।

(४) ज्वार–भाटे का समय जान सकते हैं ।

(५) ऋतुओं के परिवर्तन के साथ ऋतु के अनुरूप आहार–विहार की योजना कर सकते हैं ।

(६) त्रिकाल संध्या, अग्निहोत्र, रात्रि भोजन का त्याग आदि करने के लिए सूर्योदय, सूर्यास्त या मध्याह्न का समय जान सकते हैं ।

(७) बालक जन्म लेता है, उस दिन की जन्मराशि जानकर उससे जन्म कुण्डली बना सकते हैं । उसके आधार पर व्यक्ति के रूप, स्वभाव तथा भविष्य के विषय में जान सकते हैं ।

(८) अशुभ ग्रहयोगों और मुहूर्तों को जानकर उस समय में विशेष कार्य न करने की सावधानी रख सकते हैं ।

(९) व्रतों, उत्सवों, त्योहारों की एक सूची बना सकते हैं । मकरसंक्रान्ति को छोड़कर शेष सभी त्योहार तिथि के अनुसार ही आते हैं । इसलिए भी तिथि का ज्ञान होना आवश्यक है ।

(१०) युवक-युवती का विवाह करने से पहले परस्पर ग्रहों-नक्षत्रों का मिलान कर दोनों का जीवनभर कैसा तालमेल बैठेगा यह जानने के लिए दोनों की जुन्मकुण्डली देखी जाती है ।

(११) वायु की दिशा जानने के लिए भडली वाक्य और मेघमाला की तरह पंचांग की भी आवश्यकता रहती है ।

(१२) भारत वर्ष की परम्परा में सोलह संस्कारों की विधि शुभयोग और निश्चित शुभ मुहूर्त में ही की जाती है । वे योग जानने के लिए पंचांग की आवश्यकता पड़ती है ।

इन सब कारणों से पंचांग देखना सबको आना चाहिये ।

१७ एक विशेष सूची

तिथियों के त्योहार : जन्माष्टमी, रामनवमी, दीपावली, नवरात्रि, होली, संवत्सरी, देवदीवाली, रथयात्रा महोत्सव, पर्युषण, हनुमान जयंति, महावीर कल्याणक, गुडीपड़वा, गुरुपूर्णिमा, शरदपूर्णिमा, अक्षय तृतीया, भीम एकादशी, वसन्त पंचमी, नाग पंचमी, ज्ञान लाभ पंचमी जैसे त्योहारों की सूची बनाओ और ये वर्ष में किस मास की किस तिथि को आते हैं, ढूँढ निकालो ।

जीवन के शुभकार्य : सोलह संस्कार, जन्मदिन मनाना, नये घर में वास्तुपूजन, यज्ञोपवीत, विद्यारम्भ संस्कार (शाला जाने का प्रथम दिन) विशेषवस्तु (घर–दुकान–मकान, उपस्कर (फर्निचर), अलंकार, नये वस्त्र) खरीदना, नया व्यापार अथवा व्यवसाय शुरु करना, राजा का राज्याभिषेक, युद्ध हेतु प्रयाण, मन्दिर का शिलान्यास और मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, विवाह, खेत में बुवाई, तीर्थ यात्रा प्रस्थान जैसे कार्य शुभ मुहूर्त में करने से निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं । तथा सुखद फल की प्राप्ति होती है ।

ऋतुएँ : ऋतुओं का सम्बन्ध सूर्य के साथ है । जब सूर्य मकर राशि में संक्रमण करता है, तब से छः मास तक उत्तरायण तथा कर्क राशि में संक्रमण करता है तब से छः मास तक दक्षिणायन कहलाता है ।

सूर्य दो राशियों में रहता है तब एक ऋतु बनती है, कुल बारह राशियाँ होने से छः ऋतुएँ बनती हैं ।

ऋतु	सूर्य किन राशियों में होता है	ऋतुओं का समय
शिशिर	मकर और कुंभ	पौष पूर्णिमा से फाल्गुन पूर्णिमा
वसन्त	मीन और मेष	फाल्गुन पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा
ग्रीष्म	वृषभ और मिथुन	वैशाख पूर्णिमा से आषाढ़ पूर्णिमा
वर्षा	कर्क और सिंह	आषाढ़ पूर्णिमा से भाद्रपद पूर्णिमा
शरद	कन्या और तुला	भाद्रपद पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा
हेमन्त	वृश्चिक और धनु	कार्तिक पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा

शुभ-अशुभ अध्ययन काल - (विद्याप्राप्ति हेतु निर्धारित दिन)

अनध्ययन (पढ़ना नहीं) के दिन - दो पक्षों की एकम, आठम, चौदस तथा पूनम व अमावस । (कुल ८ दिन)

उत्तम अध्ययन : शुक्ल नवमी से शुक्ल त्रयोदशी ५ दिन
कृष्ण द्वितीया से कृष्ण सप्तमी ६ दिन

मध्यम अध्ययन : कृष्ण नवमी से कृष्ण त्रयोदशी ५ दिन
शुक्ल द्वितीया से शुक्ल सप्तमी ६ दिन

अहोरात्रि में पढ़ने का उत्तम समय : सूर्योदय से पहले की ६ घड़ी और सूर्योदय के बाद की ६ घड़ी । इसी प्रकार सूर्यास्त से पहले ६ घड़ी और बाद में ६ घड़ी ।

उत्तम समय में पढ़ने से कम परिश्रम करने पर भी अधिक फल मिलता है, जबकि अयोग्य समय में पढ़ने से अधिक मेहनत करने पर भी फल कम मिलता है ।

प्रहर और पोरिसी

प्रहर अर्थात् दिन या रात्रि के चार बराबर भाग । प्रहर के समय की गणना भी चौघड़िया और होरा की गणना की भाँति ही होती है । परन्तु प्रत्येक प्रहर का समय तीन घंटे से कुछ मिनट कम या अधिक हो सकता है ।

दिन में कौन सा प्रहर चल रहा है, यह जानने की एक विशिष्ट पद्धति है । अगर आप धूप में दक्षिण दिशा के सामने मुँह करके खड़े रहो, और

- आपकी परछाई दायीं ओर आपकी ऊँचाई से अधिक लम्बी है तो पहला प्रहर चल रहा है, यह समझना ।

- परछाई दायीं ओर आपकी ऊँचाई के बराबर है तो प्रथम प्रहर पूरा होकर दूसरे प्रहर का प्रारम्भ जानना चाहिए ।
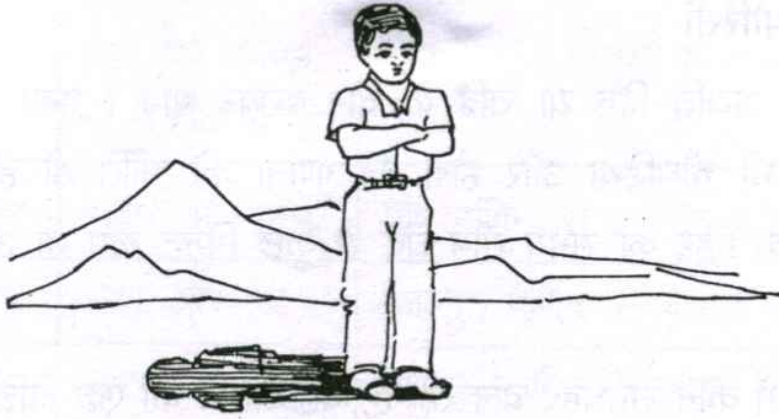
- परछाई दायीं ओर आपकी ऊँचाई से छोटी है तो दूसरा प्रहर जानना ।

- परछाई दायीं या बायीं ओर न पड़कर आपके आगे या पीछे आपके ठीक नीचे ही पडती है तो मध्याह्न का समय जानना । दूसरा प्रहर पूरा होकर तीसरा प्रहर शुरु होगा ।

- परछाई बायीं ओर आपकी ऊँचाई से छोटी है तो तीसरा प्रहर जानना ।
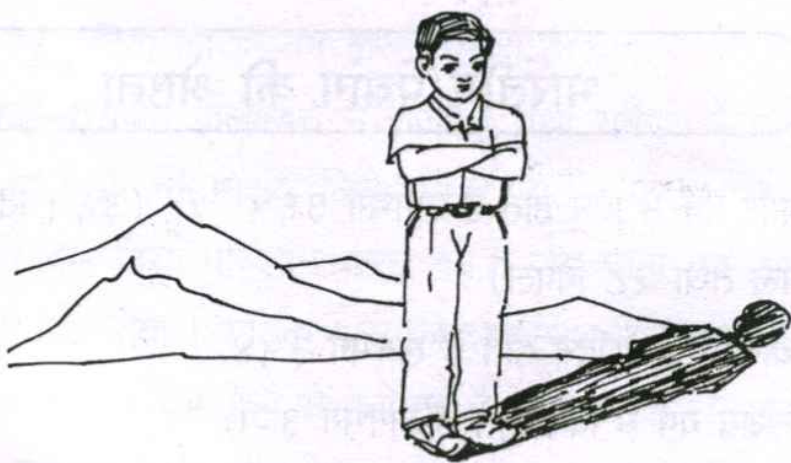
- परछाई बायीं ओर आपकी ऊंचाई के बराबर है तो तीसरा प्रहर पूरा होकर चौथा प्रहर शुरु हुआ जानना ।
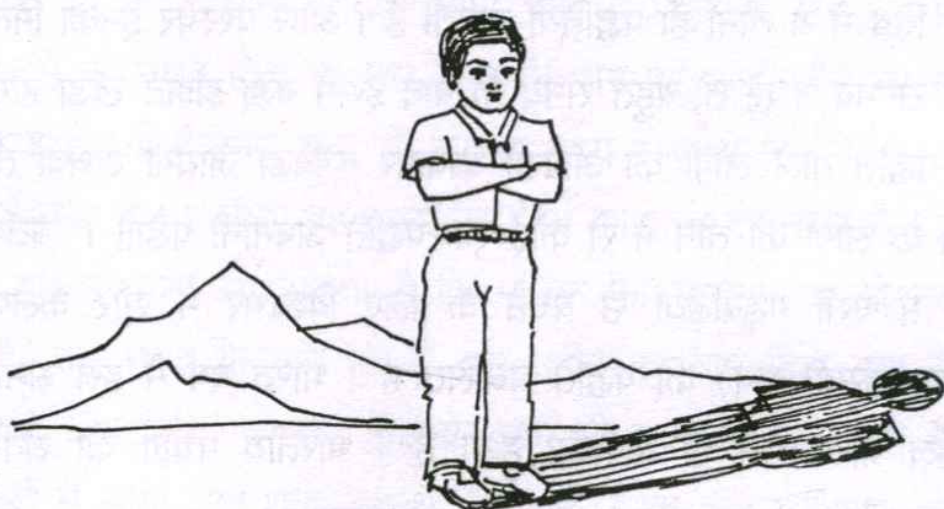
- परछाई बायीं ओर आपकी ऊँचाई से अधिक लम्बी पड़ती है तो चौथा प्रहर जानना ।

स्वयं की ऊंचाई जितनी लम्बी परछाई को पौरुष कहते हैं और उस समय को पोरिसी कहते हैं ।

(१८) भारतीय पंचांग की श्रेष्ठता

एक सौर वर्ष में दिन होते हैं लगभग ३६५ १/४ (३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल तथा २८ विपल)

एक चान्द्र वर्ष में दिन होते हैं लगभग ३५४.

एक नाक्षत्र वर्ष में दिन होते हैं लगभग ३२७ ५/६

एक सौर मास के दिन होते हैं लगभग ३० १/२

एकचान्द्र मास के दिन होते हैं लगभग २९ १/२

एक नाक्षत्र मास के दिन होते हैं लगभग २७ १/४

विश्व में ये तीनों ही पद्धतियाँ चलती हैं । अगर परस्पर इनका मिलान करना सम्भव न हो तो बहुत समय के बाद इसमें बड़ा झंझट खड़ा होगा । तीनों पद्धति वाले लोगों का आपसी व्यवहार गड़बड़ा जायेगा अथवा तीनों पद्धति के लोगों को तीन में से कोई एक पद्धति अपनानी पड़ेगी । वर्तमान समय में ऐसी गड़बड़ियों से बचने के लिए विश्वभर में सौर कैलेण्डर (तारीख-ईसवी सन) की पद्धति प्रचलित है । भारत वर्ष में इस समस्या का हल प्रारम्भ से ही निकाला हुआ है । भारतीय पंचांग की सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता है, कर्ममास और कर्मवर्ष की संकल्पना ।

इस संकल्पना में कर्ममास तीस दिनों का निश्चित किया गया है । और कर्मवर्ष ३६० दिन का ।

हर वर्ष में सौर वर्ष के आधार पर ५ १/४ दिन कर्मवर्ष के दिनों से अधिक होंगे । और चान्द्रवर्ष के आधार पर ६ दिन कर्मवर्ष से कम होंगे । प्रतिवर्ष चान्द्र वर्ष से सौर वर्ष के ११ १/४ दिन बढ़ेंगे । पाँच वर्ष में यह वृद्धि ११ १/४ × ५ = ५६ १/४ लगभग दो माह जितनी होगी । प्रत्येक ढ़ाई वर्ष में एक और पाँच वर्ष में दो अधिक चान्द्र मास की रचना

द्वारा ५६ $^{१}/_{४}$ दिनों का मिलान करना पड़ता है ।

अंग्रेजी–यूरोपीय कैलेण्डरों में राजाओं तथा धर्मगुरुओं द्वारा एक के बाद एक नासमझी के निर्णय लिये गये । ट्रायल एण्ड एरर मेथड़ के अनुसार जो चाहे जैसा परिवर्तन करते गये । जब चाहा तब अधिक मास को रखा या हटा दिया । अधिक मास की व्यवस्था भी आकाशीय घटनाओं द्वारा सृष्टि में ही प्राकृतिक रूप से बनी हुई है । प्रकृति के अनुसार पाँच वर्ष में कम से कम दो समय और केवल दो ही समय आकाश में ग्रहों के ऐसे योग बनते हैं, जिससे पाँच वर्ष में दो अधिक मास की रचना बनती है ।

हमने नक्षत्र के प्रकरण में देखा कि महीनों के नाम नक्षत्रों के नामों पर रखे गये हैं । सामान्यतया पूर्णिमा की मध्यरात्रि में लगभग मध्य आकाश में जो नक्षत्र होता है, उस नक्षत्र के नाम पर उस महीने का नाम रखा गया है । इस समय चन्द्र भी लगभग मध्य आकाश में होने से उसी नक्षत्र में होता है । इसलिए वह नक्षत्र उस दिन का चन्द्र का नक्षत्र है । इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि पूर्णिमा को चन्द्रमा का जो नक्षत्र होता है, उस नक्षत्र के नाम पर ही उस महीने का नाम दिया गया है । सप्टेम्बर, ओक्टोबर, नवेम्बर, डिसेम्बर नाम भी नक्षत्रों के ऊपर ही हैं । इन शब्दों में आया हुआ शब्द 'अम्बर' का अर्थ 'नक्षत्र वाला आकाश' होता है । और सप्टेम्बर अर्थात् सात नक्षत्र समूहवाला आकाश जिस महीने में होता है, वह महीना । 'SEPT, SEPTI, SEPTEM' आदि शब्द सात के अर्थ में ही हैं । अंग्रेजी शब्दकोश में 'SEPTEMBER' शब्द के अर्थ में आज भी 'the ninth (originally the seventh) month of the christian year ख्रिस्ती वर्ष का नौवाँ महीना (मूल सातवाँ), लिखा हुआ है । इसी तरह ओक्टो, नवेम्, डिसेम् क्रमशः आठ, नो, दस के अर्थ में ही हैं । ऐसा होने का कारण, सभी भारतीय खगोल शास्त्रों का अनुकरण

किया गया है । यह अनुकरण वाली बात विख्यात् खगोलविद् डॉ. छोटूभाई सुथार ने 'भारतीय खगोलशास्त्र मौलिक या परप्राप्य' पुस्तक में ऐतिहासिक आधार देकर सिद्ध किया है ।

महीनों का चन्द्रमा की पूर्णिमा के नक्षत्र के साथ सम्बन्ध आपने देखा । वर्तमान में गुजरात के पंचांगों में महीना शुक्ल एकम से अमावास्या तक गिना जाता है । परन्तु वास्तव में महीना सही पद्धति में कृष्ण पक्ष की एकम से पूर्णिमा तक गिनने की परम्परा है । कुछ पंचांगों में अमावास्या के लिये '३०' के बदले '०))' लिखा जाता है। '०))' संज्ञा आधी वस्तु दर्शाने के लिए गणित में प्रयुक्त होती है । पंचांगों में '०))' आधा मास होने का संकेत है । और पूर्णिमा मास पूरा होने का संकेत है । पूर्व काल में यह पद्धति चलती थी, वर्तमान में उत्तर भारत के अनेक प्रान्तों में आज भी यह पद्धति चल रही है । दोनों ही पद्धतियों के महीनों में शुक्ल पक्ष की समानता होती है । कृष्ण पक्ष में एक मास का अन्तर होने से दोनों ही पद्धतियों में कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौषादि महीनों के शुक्ल पक्ष समान हैं, जब कि कृष्ण पक्ष में भिन्नता है ।

पक्ष की दोनों पद्धतियों में क्रमानुसार नाम

मास का क्रम	**शुक्ल एकम से अमावस्या की पद्धति**	**कृष्ण एकम से पूर्णिमा की पद्धति**
१	कार्तिक कृष्ण पक्ष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
२	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	पौष कृष्ण पक्ष
३	पौष कृष्ण पक्ष	माघ कृष्ण पक्ष
४	माघ कृष्ण पक्ष	फाल्गुन कृष्ण पक्ष
५	फाल्गुन कृष्ण पक्ष	चैत्र कृष्ण पक्ष

६	चैत्र कृष्ण पक्ष	वैशाख कृष्ण पक्ष
७	वैशाख कृष्ण पक्ष	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
८	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	आषाढ़ कृष्ण पक्ष
९	आषाढ़ कृष्ण पक्ष	श्रावण कृष्ण पक्ष
१०	श्रावण कृष्ण पक्ष	भाद्रपद कृष्ण पक्ष
११	भाद्रपद कृष्ण पक्ष	आश्विन कृष्ण पक्ष
१२	आश्विन कृष्ण पक्ष	कार्तिक कृष्ण पक्ष

हमारे पंचांगों में इसके अवशेष भी देखने को मिलते हैं। जैसे कि पंचांग में लिखा है 'पौष दशमी' परन्तु वह अन्य प्रान्तों में मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी होती है। सही तो पौष दशमी ही है। इसलिए महीना पूर्णिमा से पूर्णिमा तक गिनना ही सही परम्परा है।

सूर्य के एक राशि में से दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया 'सूर्य संक्रान्ति' कहलाती है। सामान्यता सूर्य दो पूर्णिमाओं के मध्य (अर्थात् प्रत्येक महीने में) एक बार संक्रान्ति करता है।

परन्तु हर पाँच वर्ष में दो बार नियमित रूप से ऐसा होता है कि सूर्य दो पूर्णिमाओं के मध्य संक्रान्ति नहीं करता। जिन दो पूर्णिमाओं के मध्य सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती, उस महीने को अधिक मास कहते हैं। उदाहरण के लिए आषाढ़ मास में सूर्यसंक्रान्ति हुई परन्तु उसके बाद आषाढ़ पूर्णिमा से बाद की पूर्णिमा तक सूर्य संक्रान्ति नहीं करता और बाद की पूर्णिमा के बाद और उसके बाद की पूर्णिमा से पहले संक्रान्ति करता है। पिछली जिन दो पूर्णिमाओं के बीच में संक्रान्ति हुई है, वह आषाढ़ के बाद आने वाला श्रावण मास गिना जाता है। परन्तु जिन दो पूर्णिमाओं के मध्य में संक्रान्ति नहीं हुई, वह अधिक मास श्रावण मास के पहले होने से

उसे अधिक श्रावण मास नाम दिया जाता है। इस प्रकार अधिक मास को उसके बाद आने वाले महीने का नाम दिया जाता है। इस प्रकार हर पाँच वर्ष में दो अधिक मास आते हैं।

यह अधिक मास ही कर्ममास है और सामान्यतया तीस दिन का होता है। प्रत्येक पाँच वर्ष में सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष के दिनों में ५६ $^{१}/_{४}$ दिनों का अन्तर पड़ता है, यह हमने जाना है। परन्तु दो अधिक मास के ६० दिन होने से प्रत्येक पाँच वर्ष में लगभग ३ $^{३}/_{४}$ दिन बढ जाते हैं।

प्रकृति में इसका सन्तुलन करने की भी अद्भुत व्यवस्था है। प्रत्येक १६० वर्ष में सूर्य एक ही चान्द्रमास में दो संक्रान्तियाँ करता है। अर्थात् दो पूर्णिमाओं के मध्य एक के स्थान पर दो बार संक्रान्ति करता है। प्रत्येक संक्रान्ति का किसी एक महीने के साथ सम्बन्ध है। इसलिए दोनों संक्रान्तियों को दोनों महीने पूर्णिमा के मध्य में गिने जाने से अर्थात् एक ही महीने के समय में दो महीने गिनने से एक महीना वर्ष में कम हो जाता है। उदाहरण के लिये सूर्य मार्गशीर्ष की पूर्णिमा से बाद की पूर्णिमा के मध्य में दो संक्रान्तियाँ करता है, इस कारण उन दो पूर्णिमाओं के मध्य में पौष और माघ दोनों महीने गिनने पडेंगे। ऐसे समय पौष मास का क्षय मान कर पिछली संक्रान्ति के आधार पर उस महीने को माघ महीना गिना जाता है। पौष मास का क्षय होने से उस वर्ष बारह के स्थान पर ग्यारह महीने ही होंगे। प्रत्येक १६० वर्ष में ऐसे दो योग प्राकृतिक रीति से आते हैं। इसलिए अधिक मास की भाँति क्षय मास भी प्रकृति की ही देन है। हमें तो मात्र उसकी गिनती करना आना चाहिए।

यदि इस वर्ष में क्षय मास आयेगा तो उसके बाद १४१वे वर्ष में फिर से क्षय मास आयेगा। और उसके बाद पुनः १९वे वर्ष में क्षय मास

आयेगा । (इस प्रकार १६० वर्ष में दो क्षय मास आयेंगे ।) और १४१ वर्ष के बाद पुनः क्षय मास आयेगा । १६० वर्ष में दो क्षय मास का यह प्राकृतिक चक्र हमेशा चलता ही रहेगा । एक सौ साठ वर्ष में दो कर्ममास का क्षय हो जाने से ६० दिन कम हो जायेंगे ।

अधिक मास और क्षय मास की प्राकृतिक व्यवस्था की गणना का यहाँ दिया हुआ गणित अनुमानतः या लगभग है । सौरवर्ष के और चान्द्रवर्ष के दिनों की संख्या में पड़नेवाले अन्तर का समायोजन प्रत्येक पाँच वर्ष में दो अधिक मास से अथवा एक सौ साठ वर्ष में दो क्षय मास से पूरा पूरा नहीं हो पाता है । इसका गणित अत्यन्त सूक्ष्म है । और एक महायुग पूरा होने पर यह समायोजन पूरा हो पाता है ।

४३,२०,००० (तैतालीस लाख बीस हजार) सौर वर्ष के एक महायुग में चान्द्रमास की संख्या ५,४३,३३,३३६ (पाँच करोड चौंतीस लाख तैंतीस हजार तीन सौ छत्तीस) होती है । कुल अधिक मास की संख्या में से कुल क्षय मास की संख्या घटाने पर एक महायुग में शेष रहे अधिक मासों की संख्या १५,९३,३३६ (पन्द्रह लाख तिरानवे हजार तीन सौ तैंतीस) होती है । इस प्रकार हर पाँच वर्ष में अधिक मास द्वारा और हर एक सौ साठ वर्ष में क्षयमास द्वारा होने वाले समायोजन से सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष के दिनों की संख्या के बीच का अन्तर बहुत कम हो जाने से हमें उन तिथियों में आने वाले त्यौहार और सौर पंचांग (अंग्रेजी कैलेण्डर) के दिनों के मध्य न्यूनतम कमी भी दूर हो जाती है । इससे समस्याएँ खड़ी नहीं होती । (कर्मवर्ष प्रत्यक्ष उपयोग में नहीं है परन्तु कर्ममास ३० दिनों का होने से कर्मवर्ष भी ३६० दिनों का ही माना जाता है । इसलिये भारतीय परम्परा का वर्ष ३६० दिन का ही माना गया है ।

पुनःस्मरण

(१) 'त्रुटि' एक सैकण्ड का ३३,७५० भाग के समय का माप है ।

(२) ब्रह्माण्ड की कुल आयु एक महाकल्प अर्थात् ३,११,०४,००,००,००,००० (तीन लाख ग्यारह हजार चालीस अरब वर्ष) की संख्या का उल्लेख भारतीय शास्त्रों में है ।

(३) भारत में अनेक प्रकार के पंचांग अस्तित्व में हैं, जिनमें ३० प्रकार के पंचांग मुख्य हैं ।

(४) जैन दर्शन की परम्परा के शास्त्रग्रन्थों में ८८ ग्रहों के नाम दिये हुए हैं ।

(५) सूर्य के नक्षत्र में ही अगर अमावास्या हो और उसी दिन सायंकाल प्रतिपदा (एकम) तिथि शुरू हो जाय तो उस दिन अवश्य सूर्यग्रहण होगा ।

(६) कृष्णपक्ष की तृतीया को जो नक्षत्र उसी नक्षत्र में पूर्णिमा होने पर उस पूर्णिमा को अवश्य चन्द्रग्रहण होगा ।

(७) जिसके आधार पर भविष्यफल कथन होता है उस ज्योतिष शब्द का अर्थ इस प्रकार है – ज्योति अर्थात् प्रकाश और ज्योतिष अर्थात् आकाश या ब्रह्माण्ड में प्रकाश देनेवाले पदार्थों और उनकी गति–स्थिति का शास्त्र ।

पुनरुत्थान ट्रस्ट

- पुनरुत्थान ट्रस्ट शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्था है ।

- भारतीय जीवनदृष्टि पर आधारित सामान्यप्रवाह के पाठ्यक्रम तैयार करना, उनका प्रयोग करना, शिक्षा में मूलगत अनुसन्धान करना, पुस्तक और अन्य सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन करना, समाजप्रबोधन के कार्यक्रम करना पुनरुत्थान ट्रस्ट के कार्य के विभिन्न आयाम हैं ।

- पुनरुत्थान ट्रस्ट में अभी (वर्ष २००८) तक २५ अनुवाद, १० मौलिक पुस्तकें, १ डीवीडी, १ चार्ट प्रकाशित हुए हैं ।

- पुनरुत्थान ट्रस्ट की 'चिति' नामक अर्धवार्षिक शोधपत्रिका और 'पुनरुत्थान सन्देश' नामक मासिक पत्रिका (हिन्दी एवं गुजराती) प्रकाशित होती है ।

- भारतीय शिक्षा विषयक एक सन्दर्भ पुस्तकालय तैयार करने की पुनरुत्थान ट्रस्ट की योजना है ।

पुण्यभूमि भारत संस्कृति वाचनमाला

- इस वाचनमाला में १०० पुस्तिकाओं का समावेश हुआ है ।
- ये पुस्तिकायें ५ से १२ वर्ष की आयु के छात्रों के लिये बनी हैं । विषय और विषयवस्तु को देखते हुए ये बडों के लिये भी उतनी ही पठनीय होंगी ।
- इन १०० पुस्तिकाओं के तीन विभाग हैं । प्रथम विभाग की ३० पुस्तिकायें ५-७ वर्ष की आयु के, द्वितीय विभाग की ४० पुस्तिकायें ८-९ वर्ष की आयु के और तृतीय विभाग की ३० पुस्तिकायें १०-१२ वर्ष की आयु के छात्रों के लिये हैं ।
- ये पुस्तिकायें एक साथ चार भाषाओं में प्रकाशित हो रही हैं । चार भाषाएँ हैं गुजराती, मराठी, हिन्दी और अंग्रेजी ।
- भारतीय जीवनदृष्टि का आधार लेकर वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उचित मानस तैयार करने की दृष्टि से इन पुस्तिकाओं की रचना हुई है ।
- इस आयु के छात्रों को होनी चाहिये ऐसी सभी विषयों की जानकारी इन पुस्तिकाओं में देने का प्रयास किया गया है ।
- ये पुस्तिकायें मनोरंजन हेतु नहीं अपितु ज्ञान और संस्कार हेतु हैं ।
- इनकी शैली और भाषा इस आयु के छात्रों की क्षमता और प्रवृत्ति के अनुरूप रोचक और सरल रखने का प्रयास किया गया है ।

इस पुस्तिका के प्रथम प्रकाशन हेतु रु. २०००/-
पिताश्री श्री गोविंदराव शेणोय एवं मातोश्री शांताबाई की पुण्यस्मृति में
श्री एम. जगन्नाथ शेणोय की ओर से प्राप्त हुए हैं ।